1998 से निरंतर प्रकाशित

ISSN 2581-446X
वर्ष-8, अंक-3, दिसम्बर -जनवरी 2025, ₹50/-
RNI. No. MPHIN/2017/73838

कला समय

कला, संस्कृति, साहित्य एवं समसामयिक द्वैमासिक पत्रिका

28 वर्षों की सांस्कृतिक यात्रा में
पहला व्यंग्य विशेषांक का 132 वाँ अंक...

अतिथि संपादक : उमेश कुमार गुप्ता

हरिशंकर परसाई
जन्म शताब्दी वर्ष विशेषांक

संपादक : भँवरलाल श्रीवास

हरिशंकर परसाई का व्यंग्य साहित्य संसार

– संकलनः उमेश कुमार गुप्ता

RNI NO. MPHIN/2017/73838

कला समय पत्रिका वेबसाइट पर उपलब्ध

ISSN 2581-446X

1998 से निरंतर प्रकाशित

www.kalasamaymagazine.com

(पंजीयन पूर्व प्रकाशित अंक, वर्ष सम्मिलित)

देश की सर्वश्रेष्ठ एक मात्र सांस्कृतिक पत्रिका

(वर्ष : 20+08=28) पूर्णांक-132,

वर्ष-8, अंक-3, दिसम्बर-जनवरी 2025, मूल्य : ₹50/-

माधवराव सप्रे समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल म.प्र. द्वारा 'रामेश्वर गुरु सम्मान' से पुरस्कृत
श्री भारतेन्दु समिति कोटा (राज.) द्वारा 'साहित्यश्री' सम्मान एवं
साहित्य मण्डल श्री नाथद्वारा (राज.) द्वारा 'सम्पादक रत्न' सम्मान से सम्मानित
म.प्र. हिन्दी साहित्य सम्मेलन भोपाल (म.प्र.) द्वारा उर्मिला तिवारी स्मृति 'सप्तपर्णी सम्मान' से पुरस्कृत
इन्टरनेशनल ध्रुवपद-धाम ट्रस्ट, जयपुर (राज.) द्वारा 'लाइफ टाइम अचीवमेंट' सम्मान

कला समय

कला, संस्कृति, साहित्य एवं समसामयिक द्वैमासिक पत्रिका

❉ पत्रिका नहीं, एक रचनात्मक अनुष्ठान ❉

संरक्षक
विजयदत्त श्रीधर
(पद्मश्री से विभूषित)
डॉ. महेन्द्र भानावत
श्यामसुंदर दुबे
कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय
महेश श्रीवास्तव
❉
कानूनी सलाहकार
उमेश कुमार गुप्ता
(प्रिंसिपल जिला न्यायाधीश रिटा.)
❉
परामर्श
लक्ष्मीनारायण पयोधि
डॉ. नारायण व्यास
प्रो. सज्जनलाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग'
प्रो. सुधा अग्रवाल
❉
सांस्कृतिक प्रतिनिधि
चेतना श्रीवास
❉
वेबसाइट प्रबंधन
मयंक अग्रवाल

रेखाचित्र: अवधेश बाजपेयी

संपादक
भँवरलाल श्रीवास
❉
सलाहकार संपादक
डॉ. मुकेश कुमार मिश्रा
❉
सह संपादक
डॉ. मधु भट्ट तैलंग
❉
उप संपादक
राहुल श्रीवास
सुन्दरलाल प्रजापति
❉
नरिन्दर कौर
प्रबंध संपादक
❉
संपादक मंडल
डॉ. बिनय षडंगी राजाराम
साहित्य
❉
अरुण तिवारी
समसामयिक
❉
हरीश श्रीवास
कला, संस्कृति

सदस्यता सहयोग राशिः

(साधारण डाक, रजिस्टर्ड डाक शुल्क 300/- प्रति वर्ष अतिरिक्त)

वार्षिक	:	300 (व्यक्तिगत)	350 (संस्थागत)
द्वैवार्षिक	:	600 (व्यक्तिगत)	700 (संस्थागत)
चार वर्ष	:	1000 (व्यक्तिगत)	1200 (संस्थागत)
आजीवन	:	10,000 (व्यक्तिगत)	12000 (संस्थागत)

(15 वर्ष के लिए)

(कृपया सदस्यता शुल्क- ऑनलाईन/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा 'कला समय' के नाम पर उक्त पते पर भेजें)

विशेष : 'कला समय' की प्रतियाँ साधारण डाक/रजिस्टर्ड बुक-पोस्ट से भेजी जाती हैं यदि कोई महानुभाव रजिस्टर्ड पोस्ट से पत्रिका मंगवाना चाहते हैं तो कृपया वार्षिक डाक खर्च 300/- अतिरिक्त भेजने का कष्ट करें।

कार्यालय सम्पर्क :
संपादकीय एवं सदस्यता सहयोग
जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर,
अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)-462016
फोन : 0755-2562294, मो.- 94256 78058
ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com
bhanwarlalshrivas@gmail.com
वेबसाइट : **www.kalasamaymagazine.com**

ऑनलाइन सदस्यता सहयोग सुविधा :
'कला समय' का बैंक खाता विवरण

पंजाब नैशनल बैंक की शाखा अरेरा कॉलोनी भोपाल, म.प्र. **(IFSC : PUNB0093210)** के नाम देय, खाता संख्या **A/No. 09321011000775** में ऑनलाइन राशि जमा कराने के बाद रसीद की फोटोकॉपी अपने पूर्ण पते के साथ हमें भेज दें।

कला समय पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों, अतिथि संपादकों के अपने हैं, यह जरूरी नहीं कि संपादक, प्रकाशक, मुद्रक उनसे सहमत हो। पत्रिका से सम्बंधित समस्त विवाद, भोपाल न्यायालय के अधीन ही रहेंगे। सम्पादन, संचालन, प्रबंधन एवं प्रकाशन- अवैतनिक, अव्यवसायिक

विशेष नोट : © सर्वाधिकार सुरक्षित 'कला समय' प्रबंधन यह स्पष्ट करना आवश्यक समझता है कि 'कला समय' में प्रवेशांक फरवरी-मार्च 1998 से लेकर अब तक प्रकाशित होने वाली समस्त सामग्री या सामग्री के अंश के पुनर्प्रकाशन तथा पुनरुत्पादन के सर्वाधिकार कॉपीराइट अधिनियम के अंतर्गत 'कला समय' के पास सुरक्षित हैं। अत: कोई भी व्यक्ति या संस्था 'कला समय' की इस सामग्री या इस सामग्री के अंश का उपयोग प्रबंधन की पूर्वानुमति के बिना न करें।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी भँवरलाल श्रीवास द्वारा गणेश ग्राफिक्स, 26 बी, देशबन्धु भवन, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कालोनी, भोपाल (म.प्र.)- 462016 से प्रकाशित। संपादक - **भँवरलाल श्रीवास**

हरिशंकर परसाई जन्म शताब्दी वर्ष विशेषांक के प्रमुख विद्वान व्यंग्य हस्ताक्षर...

ज्ञान चतुर्वेदी
(पद्मश्री से विभूषित)

प्रेम जनमेजय

डॉ. सुभाष अत्रे

धर्मपाल महेंद्र जैन

मलय जैन

डॉ. श्यामसुंदर दुबे

योगेश कुमार गुप्ता

डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'

डॉ. मोहन गुप्त

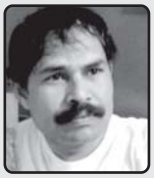
चेतन औदिच्य

कुमार सुरेश

दिनेश चौधरी

डॉ. लता अग्रवाल 'तुलजा'

अलीम बजमी

श्रवण कुमार उर्मलिया

इस विशेषांक के आवरण और रेखा चित्र के चित्रकार

अवधेश बाजपेयी
वरिष्ठ कलाकार, चित्रकार

हरिशंकर परसाई जन्म शताब्दी वर्ष विशेषांक: अतिथि संपादक

उमेश कुमार गुप्ता
(प्रिंसिपल जिला न्यायाधीश रिटा.)
वरिष्ठ साहित्यकार, व्यंग्यकार, कवि
मो. 9479909299, 9425420399

इस बार

- **अतिथि संपादक की कलम से**
  हरिशंकर परसाई के व्यंग्य बाण आज भी उतने ही खरे हैं 05
- **संपादकीय**
  हिन्दी साहित्य में व्यंग्य को व्यापक स्वीकृति एवं साहित्यिक दर्जा ... 07
- **व्यंग्य आलेख**
  परसाई अप्रासंगिक नहीं हो सकते / ज्ञान चतुर्वेदी (पद्मश्री से विभूषित) 10
  हरिशंकर परसाई, शरद जोशी और श्रीलाल.../ प्रेम जनमेजय 14
  विदेश में परसाई से दो टूक / धर्मपाल महेंद्र जैन 20
  हरिशंकर परसाई की सामाजिक चेतना / कुमार सुरेश 22
  खबर लेते और खबरदार करते परसाई / मलय जैन 25
  बदले हुए पतों वाले लिफाफों की पहुँच / दिनेश चौधरी 28
  श्री हरिशंकर परसाई के जीवन के सौ साल / उमेश कुमार गुप्ता 30
- **विविध**
  परसाई की 100 व्यथा / उमेश कुमार गुप्ता 34
- **संस्मरण आलेख**
  ''उदीयमान का सत्कार : हरिशंकर परसाई का.../ डॉ. श्यामसुंदर दुबे 39
  हरिशंकर परसाई – व्यक्तिगत यादें / डॉ. सुभाष अत्रे 42
- **व्यंग्य निबंध**
  आलोचनाशास्त्र की कसौटी पर कसा .../ डॉ. लता अग्रवाल 'तुलजा' 44
- **आत्म कथन**/हरिशंकर परसाई
  गर्दिश के दिन 47
  हरिशंकर परसाई द्वारा हस्तलिखित पांडूलिपि सौजन्य रामराव ... 50
- **व्यंग्य आलेख**
  अफसर के रिटायरमेंट का दर्द / उमेश कुमार गुप्ता 56
  आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध व्यंग्यकार / योगेश कुमार गुप्ता 58
  साहित्य के एक नए सौंदर्यशास्त्र की ज़रूरत का .../ डा. धनंजय वर्मा 61
  व्यंग्य विधा के हिमालय-पुरुष हरिशंकर..../ श्रवण कुमार उर्मलिया 65
- **व्यक्तित्व**
  इस विशेषांक के आवरण और रेखाचित्र के.../ अवधेश बाजपेयी 68
- **संस्मरण आलेख**
  भाई रतन कुमार : व्यक्ति नहीं, संस्था / हरिशंकर परसाई 70
- **विविध**
  हरिशंकर परसाई की यादगार रचनाएँ/ संकलन: उमेश कुमार गुप्ता 71
  हरिशंकर परसाई की मृत्यु के बाद की... / संकलन: उमेश कुमार गुप्ता 74
  हरिशंकर परसाई का स्तम्भ लेखन/ संकलन: उमेश कुमार गुप्ता 76
- **परसाई के स्तंभ**
  परसाई जी की नजर में व्यंग्य / उमेश कुमार गुप्ता 77
- **समय की धरोहर....**
  लिपि : लेखन और कालांश की स्मृति / डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' 82
- **अद्वैत विमर्श**
  भारतीय ज्ञान परम्परा के प्रखर सूर्य .../ डॉ. मोहन गुप्त 87
- **कला-अक्ष**
  रूपों के संबंधों की खोज करती : डॉ काले की कृतियां / चेतन औदिच्य 93
- **शख्सियत**
  महेश श्रीवास्तव के जन्म दिवस के अवसर पर.../ अलीम बजमी 95
- **आयोजन, समवेत, पत्रिका के बहाने** **98-102**

शब्द संयोजन एवं आकल्पन - गणेश ग्राफिक्स, भोपाल, 9981984888
मुख्य आवरण - अवधेश बाजपेयी
छायाचित्र -मनीष सराठे, सुनील सेन, गूगल से साभार, समाचार पत्र
सहयोग- धन सिंह, लता श्रीवास | **रेखाचित्र :** अवधेश बाजपेयी
आवरण सज्जा - मनोज माकोड़े, गणेश ग्राफिक्स

हरिशंकर परसाई के व्यंग्य बाण आज भी उतने ही खरे हैं

हरिशंकर परसाई केवल एक लेखक नहीं थे, वे विचारों की मशाल थे। उन्होंने व्यंग्य के माध्यम से समाज में बदलाव लाने की कोशिश की। उनकी शैली और दृष्टिकोण ने हिंदी साहित्य को नई दिशा दी। उनकी जन्म शताब्दी व्यंग्य साहित्य के लिए प्रेरणा का युग है, जो यह बताते हैं कि परसाई जी की लेखनी कालजयी है।

हम श्री हरिशंकर परसाई जी का जन्म शताब्दी वर्ष मना रहे हैं और लोगों के विशेष अनुरोध पर पहली बार व्यंग्य पर 'कला समय' कला, साहित्यिक पत्रिका यह विशेषांक निकाल रही है।

सम्पादक भँवरलाल जी श्रीवास के द्वारा बहुत साहस करके मुझ जैसे असाहित्यकार को अतिथि संपादक का भार सौंपा है। मैं व्यंग्य के द्रोणाचार्य हरिशंकर परसाई का एकलव्य हूँ। कुछ लिखा है। अफसर के रिटायरमेंट का दर्द पढ़ने मिलेगा। व्यंग्य के श्री गणेश हरिशंकर परसाई जी ने 36 साल अपने विश्वासों को मजबूती से पकड़कर, बिना समझौते के, जो सही समझा, वह लिखा है। जो कुछ मानव-विरोधी है, उस पर निर्मम प्रहार किया है।

अपनी तीक्ष्ण लेकिन सत्य लेखन के नतीजे भोगे लेकिन कोई भी गर्दिश उन्हें सतत, लगातार, निरन्तर लिखने से नहीं रोक पाई। पिटे व्यवस्था का शिकार हुए ,विकलांगता तक उनकी स्फूर्ति, शक्ति ,विश्वास को कम न कर पाई। वे पहले लेखक हैं जिन्होंने जीवनकाल में छह खंड में रचनावली निकाली जिसके सम्बन्ध में उनका कहना था कि वे पुराने मित्रों में स्वामी जी कहलाते हैं ।

ऋषि परम्परा है कि संन्यासी अपना श्राद्ध स्वयं करके मरता है। तो रचनावली उनका अपना श्राद्धकर्म है, जो वे कर रहे हैं। उन्हें आसन्नमृत्यु का डर नहीं था। लेकिन जीते जी वह अपने साहित्य को संयोजित करना चाहते थे। उनका उद्देश्य था कि निबंध, कहानी,उपन्यास, लघुकथा, स्तम्भ लेखन सब वर्गीकृत हो जाये।

परसाई की लोकप्रियता का कारण अधिकतम लोग व्यवस्था पर आक्षेप करने के कारण मानते हैं। जबकि वास्तव मे लोक प्रिय होने का कारण स्तम्भ लेखन के माध्यम से आम लोगों से जुड़ना था । हैरान परेशान व्यथित किससे अपनी बात कहे, एक व्यक्ति की समस्या उसकी व्यक्तिगत न होकर कई लोगों की सामूहिक होती है। उसे उजागर किया गया। समाधान बताये गये। लोगों को परसाई अपने घर का आदमी लगा और वे कबीर, प्रेमचंद के मार्ग पर चलते हुए लोकप्रियता के शिखर पर पहुँच गए। बच्चे, जवान, बूढ़े सभी उनके प्रशंसक बन गए। लोग पूछते थे लड़की कैसे पटेगी, बिजली, पानी , सड़क सभी समस्याओं का समाधान माँगा जाता था।

श्री परसाई ने स्तम्भ लेखन की शुरुआत 1947 में जबलपुर से प्रकाशित 'प्रहरी' नामक साप्ताहिक पत्र के माध्यम से की थी। इस स्तम्भ का शीर्षक 'नर्मदा के तट से' था, और परसाई जी उसमें 'अघोर भैरव' के नाम से लिखते थे। यह स्तम्भ 1960 तक जारी रहा। इस पत्र के प्रधान सम्पादक स्व. भवानीप्रसाद तिवारी थे। इसके अलावा परिवर्तन में 'अरस्तू की चिट्ठी', सारिका में 'कबीरा खड़ा बाजार में', कल्पना में 'और अन्त में', करण्ट में 'माटी कहे कुम्हार से' जैसे स्तम्भ अत्यधिक लोकप्रिय रहे हैं। जिन्होंने जनप्रियता की सीमा तोड़ दी। परसाई जी को (जनता के लेखक) की संज्ञा पाठकों के द्वारा दी गई हैं। उन्होंने लोक विश्वास, लोकप्रियता को ज़िन्दा रखा।

कम दाम में अपने पाठकों की माँग पर पेपर बैक संस्करण उपलब्ध कराया। परसाई ने अपने नाम को चरितार्थ किया और पारसा (धर्मात्मा) होने की अवस्था या भाव; धार्मिकता; साधुता; सदाचार को व्यंग्य के माध्यम से निभाया।

15 वीं शताब्दी में एक कबीर का जन्म हुआ था और 20 वी सदी में उनका पुनर्जन्म परसाई के रूप में हुआ। जो अपने कंधे पर बंदूक़ रखकर चलाते मिला, उसने किसी अगर मगर का सहारा नहीं लिया। अक्सर लोग व्यंग्य तो करते हैं लेकिन अपनी चमड़ी बचाकर जबकि परसाई जी ने सूली पर चढ़कर व्यंग्य लिखा। आपातकाल में भी कलम की धार कुंद नहीं हुई थी। आलोचक कहते हैं उन्हें ज्ञानपीठ योग्य नहीं समझा गया। वे पुरस्कार के लिए लिखते तो दुखी होते। गाँधी जी को भी आजतक शान्ति के नोबेल पुरस्कार के योग्य नहीं माना गया। जबकि सारा विश्व गाँधी दर्शन को मान चुका है। शान्ति के लिए गाँधी वाद से कोई अच्छा रास्ता नहीं हैं। गाँधीवाद से परसाई जी भी प्रभावित थे। गाँधी जी की शाल, बन्दर, प्रतिमा,लाठी आदि उनके प्रिय विषय रहे हैं।

उनके निबन्ध पाठ्य पुस्तकों में शामिल किये गये थे। उनके लिखे व्यंग्य पर कई नाटक खेले गये और वे व्यंग्य विद्या के अमर लेखक माने जाते हैं। वे लोक विश्वास के रूप में उभरे और व्यंग्य को लोक विश्वास की चरमसीमा तक पहुँचायाँ। हरिशंकर परसाई केवल एक लेखक नहीं थे, वे विचारों की मशाल थे। उन्होंने व्यंग्य के माध्यम से समाज में बदलाव लाने की कोशिश की। उनकी शैली और दृष्टिकोण ने हिंदी साहित्य को नई दिशा दी। उनकी जन्म शताब्दी व्यंग्य साहित्य के लिए प्रेरणा का युग है, जो यह बताते हैं कि परसाई जी की लेखनी कालजयी है।

2024 में उनकी जन्म शताब्दी के अवसर पर उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए उनके योगदान को नए सिरे से समझने और उनके व्यंग्य की धार को महसूस करने का अवसर है। उनकी रचनाएँ आज के समय में भी प्रासंगिक हैं, क्योंकि वे समाज के उन मुद्दों पर बात करती हैं, जो आज भी जीवित हैं।

व्यंग्यकारों से मुझे एक ही शिकायत है कि वे मर्ज़ तो बता देते हैं लेकिन दवा नहीं देते। समस्या का कुछ तो समाधान बताना चाहिए। जब बीमारी है तो इलाज भी होगा। केवल गाली देने,गलती दिखाने से काम नहीं चलेगा । जब हम छेद देख सकते है तो उन्हें भर भी सकते है। मैं इस विशेषांक के शुधिलेखकों में सर्वश्री डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी (पद्मश्री से सम्मानित), प्रेम जनमेजय, डॉ. सुभाष अत्रे (आई.पी.एस. से.नि.), मलय जैन सहायक महानिरीक्षक मध्यप्रदेश पुलिस भोपाल, डॉ. श्याम सुंदर दुबे, श्रवण कुमार उर्मलिया, धर्मपाल महेन्द्र जैन, कुमार सुरेश, योगेश कुमार गुप्ता प्रधान न्यायाधीश (से.नि.), डॉ. लता अग्रवाल, डॉ. श्रीकृष्ण जुगुनू, डॉ. मोहन गुप्त सहित विशेषांक में सम्मिलित स्तंभ लेखकों का विशेष आभार जिनके रचनात्मक सहयोग के कारण यह विशेषांक विशेष और संग्रहणीय बन पड़ा है।

उमेश कुमार गुप्ता
प्रिंसिपल जिला न्यायाधिश (से.नि.)
मो. 9479909299
Email- gupta.umesh0@gmail.com

संपादकीय

अनुरोध : इस हरिशंकर परसाई जन्म शताब्दी विशेषांक का उद्देश्य व्यंग्य विधा की विख्यात शख्सियत से साक्षात्कार कराना है। किसी की मानहानि करना नहीं।

आभार : उन सभी प्रकाशकों, लेखकों, सामग्री संग्रहकर्ताओं तथा संदर्भ सामग्रीदाताओं का जिनके महत्वपूर्ण रचनात्मक सहयोग से प्रस्तुत अंक 'कला समय' का संग्रहणीय विशेषांक बन सका।

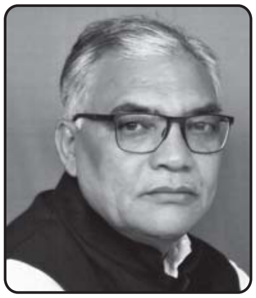

हिन्दी साहित्य में व्यंग्य को व्यापक स्वीकृति एवं साहित्यिक दर्जा दिलाने वाले : हरिशंकर परसाई

''एक दिन फिर फूटेंगे नये-नये पत्ते
उस बोधिवृक्ष से
एक दिन तानेंगे अपना धनुष एक लव्य आज के
गुरु दक्षिणा में बिना दिये अपना अँगूठा
एक दिन फिर भटके मेघों से बरसेगा पानी
कोई मेघ मल्हार सुनते-सुनते
नये अद्वैत की रौशनी में
दलित लिखेंगे अपना भवितव्य
आखिर एक दिन हम कमजोरों को मिल जायेगी यह पृथ्वी''

- ओ.एन.वी. कुरुप

विश्वविख्यात, सुप्रसिद्ध, यशस्वी व्यंग्यकार, स्तम्भकार, कथाकार, उपन्यासकार, संपादक हिन्दी साहित्य में व्यंग्य को व्यापक स्वीकृति एवं साहित्यिक दर्जा दिलाने वाले हरिशंकर परसाई हमारे 'ग्रेट मास्टर्स' में से एक हैं। जिनकी लिखी हर लाइन में शब्दों के बाण रूपी सम्पूर्ण व्यंग्य बोलता है। गद्य लेखन के द्वारा उन्होंने जो रचनात्मक लड़ाई लड़ी वह उन्हें दुनिया के उन चुनिंदा रचनाकारों में प्रतिष्ठित करती है, जिन्होंने एक विषम तथा बंधे हुए समाज को आमूल बदलने के लक्ष्य को कभी नहीं छोड़ा। कथाकार और उपन्यास के रूप में तथा नाटक लेखन में ऊंचाईयां छूने वाले परसाई की भाषा वही है जिसमें वे बोलते थे। उनकी भाषा कबीर-शैली की बेबाकी से तथा प्रेमचंद की सर्वकालिकता से जुड़ी हुई है। उन्होंने लोक शिक्षण का अतुलनीय काम अपनी कलम से किया। हरिशंकर परसाई सचमुच में कलम के असली सिपाही थे। उनके लिखे का नाट्य-रूपांतरण खूब हुआ है और अब भी हो रहा है। परसाई रचनावली (राजकमल प्रकाशन) द्वारा पहला संस्करण जनवरी 1985 तथा आठवां संस्करण 2023 में छह खण्डों में प्रकाशित हुआ है। जिसमें हरिशंकर परसाई का अधिकांश सृजन इन छह खण्डों के माध्यम से पाठकों तक पहुंच चुका है। उनकी कथा-दृष्टि समकालीन भारतीय समाज और मनुष्य जीवन की विसंगतियों और अंतर्विरोधों तक पहुंचती है और हिन्दी के साहित्यिक इतिहास में एक सकारात्मक भूमिका निभाती है। व्यंग्य शब्द को हिन्दी साहित्य में प्रतिष्ठित करने एवं उसे एक विधा विशेष का दर्जा दिलाने वाले जो लेखक अग्रिम पंक्ति में हैं, उनमें हमारे मध्यप्रदेश की धरा पर जन्में श्री हरिशंकर परसाई जी एवं श्री शरद जोशी जी उन्हीं में से दो महान हस्ताक्षर व्यंग्य विधा के हैं। जिस पर हम सबको और भारत के हृदय प्रदेश मध्यप्रदेश को गर्व है। उन्होंने अपने लेखन को अपनी आजीविका बनाने का जोखिम उठाया। ऐसा कौन लेखक होगा जो अपने जीते जी अपने जन्मशती के आयोजन को लेकर मुखर तरीके से इस तरह की टिप्पणी करेगा वह सिर्फ हरिशंकर परसाई जी हो सकते हैं।'मैंने अपनी जन्मशती के आयोजन को लेकर मोटे तौर पर एक खाका तैयार कर लिया है। केंद्रीय आयोजन यही होगा। बाकी लोग भी चाहे तो अपनी-अपनी हैसियत विचार धारा, शत्रु अथवा मित्र-भाव से आयोजन कर सकते हैं। ऐसी संस्था जो मुझे समस्त भारतीय भाषाओं में सदी का महानतम लेखक घोषित करे उसे इस शुल्क से छूट मिल सकती है। यह छूट मुझे महान साबित करने के अनुपात में होगी। जिस संस्था के हाथ इस मामले में तंग हो, वे चाहे तो शत्रु-लेखकों की निंदा कर सकते हैं। इससे मेरी आत्मा प्रसन्न होगी। संस्थाएं चाहे तो मैं उन्हें ऐसे लेखकों की सूची सौंप सकता हूं। - हरिशंकर परसाई ! वे अपनी भूमिका में लिखते हैं कि निबंध लिखते हुए मुझे सार्थकता और संतोष का अनुभव हुआ है। तो दूसरी ओर परसाई यह भी लिखते हैं कि एक खास तरह का पाठक 'आलोचक' कहलाता है। उसके बारे में कुछ नहीं कहा